9

प्रभु-भोज

यीशु के धर्म में प्रभु-भोज का मुख्य स्थान है। भोज चाहे साधारण स्थिति में लिया जाता है, परन्तु इसके उद्देश्य, स्वभाव और लिए जाने के समय पर विवाद खड़ा हुआ है। नया नियम ''सहिभागिता'' (1 कुरिन्थियों 10:16), ''प्रभु की मेज'' (1 कुरिन्थियों 10:21), ''प्रभु-भोज'' (1 कुरिन्थियों 11:20) और ''रोटी तोड़ना'' (प्रेरितों 2:46; 20:7; 1 कुरिन्थियों 10:16; लूका 24:30, 35; मत्ती 26:26 भी देखें; मरकुस 14:22; लूका 22:19) की बात करता है।

अलग-अलग आयतों में साधारण भोजन को ''भोज'' (यूहन्ना 12:2; 1 कुरिन्थियों 11:21)। और ''रोटी तोड़ना'' (प्रेरितों 2:46; देखें 20:11; 27:35) के रूप में कहा गया है। यह तय करने के लिए कि जब प्रभु भोज कहा गया हो तो इन शब्दों का अर्थ क्या हो सकता है, केवल संदर्भ का इस्तेमाल किया जा सकता है। आम तौर पर अंग्रेज़ी में ''the breaking of bread'' (प्रेरितों 2:42) का इस्तेमाल करते हुए यूनानी उप-पद *tou* ''the'' का अर्थ प्रभु भोज होता है। ''the breaking of bread'' विशेष रोटी का तोड़ना अर्थात प्रभु की रोटी तोड़ना है न कि कोई साधारण खाना।

''प्रभु का'' (यू.: *kuriakos*) सम्बन्ध कारक (सम्बन्ध वाचक) संज्ञा *नहीं* है, जिसका अर्थ प्रभु से जुड़ा भोज हो। बल्कि यह एक विशेषण के रूप में ''प्रभु का'' ''प्रभु के सम्मान में'' का संकेत है (1 कुरिन्थियों 11:20)। यह क्रिस्टोफस कोलम्बस और सैनिकों के सम्मान में अलग रखे विशेष दिन का संकेत देते हुए ''कोलम्बस दिवस'' और ''सैनिक दिवस'' जैसा है। यही इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य 1:10 में मिलता है जहां *कुरियाकोस* प्रभु के सम्मान के दिन को सुधारता है। *कुरियाकोस* के इस्तेमाल का अर्थ है कि यह दिन और भोज दोनों ही प्रभु के सम्मान में माने जाएं; इस प्रकार उन्हें ''शाही''[1] दिन ''शाही'' भोज कहा जा सकता है। इनको यीशु का विशेष दिन और भोज मानकर उसे समान देने के लिए अलग रखा गया है।

प्रभु का भोज एक बड़े कमरे में आरम्भ किया गया था जहां यीशु अपने पकड़वाए जाने की रात बारह प्रेरितों के साथ यहूदी फसह मना रहा था (मत्ती 26:17-28; मरकुस 14:12-24; लूका 22:15-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-25)। यीशु ने इसे उस समय इसलिए स्थापित किया हो सकता है, क्योंकि फसह और प्रभु भोज में कई समानताएं हैं। फसह यीशु की जो हमारा फसह है परछाई थी (1 कुरिन्थियों 5:7)।

भोज लेना

प्रभु भोज (1 कुरिन्थियों 11:20) यीशु द्वारा अधिकृत, के द्वारा स्थापित, उसके सम्मान में तथा अन्य सभी भोजों से विशेष रूप से अलग है। रोटी और दाख के रस के भौतिक संकेत हमें यह याद दिलाने के लिए होने चाहिए कि उसने परमेश्वर का अपना आत्मिक स्वभाव छोड़कर मनुष्य

का वास्तविक रूप ले लिया (फिलिप्पियों 2:7; इब्रानियों 2:14)। वह मानवीय देह में परमेश्वर बना (मत्ती 1:23; यूहन्ना 1:14; कुलुस्सियों 1:22)। उसने रोटी और दाख के रस को अपनी देह और लहू कहा (मत्ती 26:26-28) ताकि हम उनका सम्मान ऐसे करें जैसे वे उसकी देह और लहू हों।

पौलुस ने लिखा कि प्रभु भोज एक देह (1 कुरिन्थियों 10:16) अर्थात कलीसिया (इफिसियों 1:22, 23) के द्वारा यीशु के लहू और उसकी देह की ''सहिभागिता'' या ''संगति'' (यू.: *koinonia*) है। यह संगति रोटी खाने और कटोरे से पीने की भौतिक गतिविधि के द्वारा आत्मिक अर्थ में होती है। इसे लेते हुए हमें यीशु के बारे में इन बातों पर विचार करना होता है: (1) वह स्वर्ग से आया परमेश्वर का पुत्र है। (2) आत्मिक जीव होने के कारण उसने हमारे जैसा जीवन अनुभव करने के लिए देह और लहू का मानवीय रूपधारण किया। (3) उसने अपनी मृत्यु में हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए। (4) उसका लहू हमारे पापों के लिए उण्डेल दिया गया। (5) क्रूस पर वह हमारे लाभ के लोगों के सामने नंगा और लज्जित हुआ। (6) वह गाड़ा गया और मरे हुओं में जी उठा। (7) जब हम उसके साथ सहभागिता करने की इच्छा करते हैं तो वह स्वर्ग से हमें देख रहा होता है। (8) वह स्वर्ग पर ऊपर उठा लिया गया और उसे राजाओं के राजा और प्रभु के प्रभु का मुकट पहनाया गया। (9) वह वापस आएगा। (10) उसने जो कुछ भी किया वह हमारे लिए उसके प्रेम के कारण था।

इसमें भाग लेने की हमारी जिम्मेदारी यीशु के स्मरण में उस पर ध्यान करने की है (1 कुरिन्थियों 11:24, 25)। हमारा ध्यान रोटी, दाख के रस या इसमें भाग लेने वालों पर नहीं बल्कि यीशु पर होना चाहिए, जिसका रोटी और दाख के रस से संकेत मिलता है। हमें भाग लेने में अपने उद्देश्य, यीशु और उसके बलिदान की महानता, हमारे लिए उसके प्रेम, हमारी आत्मिक आवश्यकता और आत्मिक नवजागरण पर विचार करना चाहिए जो उसके साथ सहभागिता से आना चाहिए। इसे उसी ढंग से खाने वाले आत्मिक तौर पर कमज़ोर हो सकते हैं (1 कुरिन्थियों 11:30), इसलिए आत्मिक सामर्थ प्रभु भोज के सही ढंग से लेने से मिलनी आवश्यक है। एक दूसरे के साथ मिलकर भाग लेते हुए यीशु के साथ सहभागिता करनी आवश्यक है। प्रभु भोज ठीक ढंग से तब लिया जाता जब यीशु की देह और लहू के प्रतीक के द्वारा हमारी उसकी देह और उसके लहू के साथ आत्मिक तौर पर सहभागिता हो।

रीति, सामान्य भोजन या प्रथा के रूप में प्रभु भोज खाने वाले लोग इसे उस गंभीरता से नहीं लेते जिससे इसे लिया जाना चाहिए। अवसर के अयोग्य ढंग से इसे खाने वाले अपने आप पर न्याय (''दण्ड''; KJV) के लिए खा रहे हैं, क्योंकि वे यीशु के बलिदान पर ध्यान नहीं लगा रहे हैं (1 कुरिन्थियों 11:27-29)।

''अयोग्य'' शब्द का इस्तेमाल करते हुए पौलुस खाने वाले व्यक्ति की योग्यता पर विचार नहीं कर रहा था, बल्कि वह उस ढंग की बात कर रहा था जिससे भोज खाया जाता है। यीशु के बलिदान के योग्य कोई भी नहीं है। अपने कमज़ोर ढंग से हमें रोटी और दाख के रस के हमें दिए जाने के ढंग से सम्मान और भक्ति दिखाना आवश्यक है। यदि हम सहभागिता में यीशु पर ध्यान नहीं लगा पाते तो हम इसे ''अनुचित रीति से'' ले रहे हैं।

अपनी परख करने का हमारा उद्देश्य (1 कुरिन्थियों 11:28)। अपने जीवनों का अवलोकन करना नहीं यानी यह पता लगाना नहीं है कि हम इसे खाने के योग्य हैं या नहीं बल्कि यह देखना

है कि कहीं हमने सप्ताह के दौरान पाप तो नहीं किया। न ही हमें अपने जीवनों पर ध्यान करने और अपनी आत्मिक उन्नति की समीक्षा करने या अपनी पिछली गलतियों पर ध्यान करने के लिए कहा गया है। प्रभु भोज खाने की योग्यता पाप रहित होना नहीं है। क्योंकि यदि यह मानक होता तो किसी को भी इसे खाने की अनुमति न होती। कोई गलती करके पाप न करने वालों ने सम्भवतया वह भलाई न करके जिसे वह जानते थे कि उन्हें करना चाहिए पाप किया है (याकूब 4:17)।

मानवीय जीवों के रूप में हमें कई बार दिखाई देने वाले स्मरणों की आवश्यकता होती है। एक आदमी ने मरने से थोड़ा पहले अपने पोते को जेब में से चाकू दे दिया। जब भी वह लड़का उस चाकू को देखता तो उसे अपने दादा याद आ जाते। इसी प्रकार रोटी और दाख का रस खाने से हमें यीशु और हमारे लिए उस बलिदान का स्मरण आना चाहिए। प्रभु भोज के खाने से हम संसार को यीशु की मृत्यु और उसके फिर वापस आने में अपने विश्वास को दिखाते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)। हम रोटी और दाख के रस में उन्हें सम्मान देने के लिए भाग नहीं लेते, क्योंकि वे पवित्र नहीं हैं बल्कि यीशु की देह और लहू के सम्मान में भाग लेते हैं, जिसे वे दर्शाते हैं।

खा और पी कौन सकता है?

अधिकतर मासों में कैथोलिक चर्च आम लोगों को मय नहीं देते यानी इसे केवल याजक ही पीते हैं। सच्चाई यह है कि देह के हर सदस्य को प्रभु भोज में भाग लेने का अधिकार है (1 कुरिन्थियों 10:16, 17)। प्रभु का भोज पाप रहित लोगों के लिए रक्षित नहीं है, क्योंकि सब ने पाप किया है (रोमियों 3:23)। यह भोज पापी लोगों के लिए है, जिन्हें मसीह और उसकी एक देह में बपतिस्मा लेने से यीशु के लहू से धोया गया है (1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:27)। रोटी और कटोरा मसीही लोगों को यीशु द्वारा हमारे लिए किए गए महान बलिदान को समझने के लिए सहायता के लिए है।

इब्रानियों 13:10 कहता है, ''हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं।'' यह आयत प्रभु भोज के लिए हो भी सकती है और नहीं भी। दोनों ही स्थितियों में यह यह नहीं कहती कि ऐसे लोग हैं जो खा *नहीं सकते* पर कुछ लोग हैं, जिन्हें खाने का *अधिकार नहीं* है। केवल उन्हीं लोगों को जो केवल परमेश्वर के घराने के हैं उसके मेज पर खाने का अधिकार है। खतना रहित विदेशियों में से किसी को फसह खाने का अधिकार नहीं था (निर्गमन 12:43-45, 48), बेशक खतना से बाहरी लोग भाग लेने के योग्य हो सकते थे (देखें गिनती 9:14)। फसह को प्रभु भोज नहीं कहा जा सकता पर फसह के नियमों से यह सुझाव मिल सकता है कि केवल वही लोग इसमें भाग ले सकते हैं, जिन्हें परमेश्वर के लोगों के लिए उपलब्ध संसाधनों में भाग लेने का अधिकार है। मसीही लोगों को जो मसीह की देह बनते हैं, प्रभु के भोज को खाने का अधिकार है (1 कुरिन्थियों 10:16, 17)।

क्या मसीही लोगों को भोज केवल उन्हीं को देना चाहिए जो उन्हें लगता है कि एक ही देह के सदस्य हैं? यानी क्या मसीही लोगों को ''बन्द सहभागिता'' करनी चाहिए? बाइबल में ऐसी कोई आज्ञा नहीं है। इकट्ठा हुए लोगों को समझाने की शायद सबसे अच्छी नीति यह है कि मसीह की देह के अंग जिन्होंने एक ही देह में बपतिस्मा लिया हो (1 कुरिन्थियों 12:13) इसे खाने का

अधिकार रखते हैं। हर व्यक्ति को चाहिए कि ''अपनी परख'' कर ले (1 कुरिन्थियों 11:28) कि वह इस भोज में क्यों और कैसे भाग ले रहा है।

हमें क्या खाना और पीना है?

यीशु ने कहा कि उसके अनुयायी रोटी खाएं और दाख का रस पीयें (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-24; लूका 22:19, 20; 1 कुरिन्थियों 11:23-25)। इससे अधिक या कम करना यीशु की आज्ञा को तोड़ना है। यीशु द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला भोजन अखमीरी रोटी था। उसके द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला पेय अंगूर का रस था। इसे मय नहीं कहा जाता, जिसका अर्थ सम्भवतया यह है कि यह खमीर रहित रस था। यदि कोई व्यक्ति एक रोटी का इस्तेमाल करता है या रोटी में जोड़ता है तो वह उससे आगे जा रहा है जो यीशु ने बताया है। इसके अलावा यदि कोई किसी और रस का इस्तेमाल करता है या दाख के रस में कोई और रस मिलाता है, तो वह ऐसा यीशु के अधिकार के बिना करता है।

मौरमन चर्च में दाख के रस की जगह पानी लिया जाता है। कइयों ने दाख के रस में और रस मिला लिए हैं, किसी और रस का इस्तेमाल करते हैं या सॉफट ड्रिंक लेते हैं। यह सब यीशु द्वारा दी गई आज्ञा से छेड़ छाड़ है और उसके अधिकार का उल्लंघन है। कइयों ने दाख के रस में पानी मिला लिया है। शायद यह समझदारी नहीं है पर यदि पानी मिला लिया जाए तौ भी यह दाख का रस ही रहता है, जब कि किसी और रस को मिलाने का स्पष्ट अर्थ यह है कि दो तरह के रस हैं। यीशु द्वारा किसी और भोजन या रस को मिलाने की आज्ञा का अधिकार कहीं नहीं मिलता जिसमें उसके द्वारा स्पष्ट बताए गए प्रतीकों के लिए किसी और चीज़ को लाया जाए या दाख के रस को न लिया जाए। ऐसा करना यीशु द्वारा दी गई आज्ञा के अनुसार *नहीं* है, जिसे सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:20)।

कई लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु यह कहकर कि ''क्योंकि मेरा मास वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है'' (यूहन्ना 6:55) अक्षरश: बात कर रहा था। क्योंकि यहूदियों ने इसे अक्षरश: लिया इसलिए उन्हें ठोकर लगी थी। यीशु ने यह दिखाते हुए कि जो वह कह रहा था वह सांकेतिक था ''आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैंने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं और जीवन भी है'' (यूहन्ना 6:63)। उसने बताया कि उसके कहने का क्या अर्थ था। यीशु की देह का कोई भाग खाने और उसका लहू पीने से कोई लाभ नहीं होना था। आत्मिक जीवन उसके वचनों से आता है (यूहन्ना 6:63; 1 पतरस 1:23)। हम आत्मिक रूप से उसमें विश्वास करने के द्वारा उसकी देह खाते और उसका लहू पीते हैं। ऐसा करने से हमें जीवन मिलता है (यूहन्ना 3:36; 6:47)।

हमें इसे कैसे खाना और पीना है?

व्यवस्थित ढंग से

नये नियम में यह बिल्कुल नहीं बताया गया है कि आराधना के दौरान प्रभु भोज कब लिया जाना चाहिए। प्रभु आराधना की व्यवस्था के बारे में बाइबल अवश्य कुछ नियम देती है। पौलुस ने लिखा, ''पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:40)।

यदि एक ही समय में बहुत सी गतिविधियां चल रही हों तो एक गतिविधि से दूसरी में हस्तक्षेप हो सकता था। पौलुस ने कहा कि ''यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो या बहुत हो तो तीन जन बारी-बारी से बोलें और एक व्यक्ति अनुवाद करे'' (1 कुरिन्थियों 14:27; देखें आयतें 29-31)।

यूनानी *taxis* (''व्यवस्थित रूप से''; 1 कुरिन्थियों 14:40) का इस्तेमाल ''क्रम में एक के बाद एक/क्रमांश: में वस्तुओं के प्रबन्ध ... व्यवस्थित ढंग से सम्भवतया 'एक के बाद एक' '' के लिए किया जाता है।[2] पौलुस मसीही लोगों को समझा रहा था कि एक गतिविधि से दूसरी को मिलाकर गड़बड़ न करें। हर बात सलीके से हो यानी एक पूरी हो जाने के बाद दूसरी हो। यह नियम एक ही समय में दो लोगों के प्रचार करने को निकाल देता है।

यह एक व्यक्ति द्वारा प्रार्थना में अगुआई करने या मण्डली के प्रभु भोज लेते समय व्यक्ति को प्रचार करने से रोकता है। प्रचारक को तब प्रचार नहीं करना चाहिए जब मण्डली गा रही हो। यही बात प्रभु भोज लिए जाने के समय गाने पर लागू होती है। भोज का उद्देश्य सदस्यों को यीशु, उनके लिए उसके बलिदान और उसके साथ उनके सम्बन्ध पर मनन करने का समय देना है।

प्रभु भोज के दौरान गीत गाने का आरम्भ शायद इसलिए हुआ क्योंकि हमारा वर्तमान समाज यह सोचता है कि हर क्षण कुछ न कुछ होते रहना आवश्यक है और शांत समय को निकाल देना आवश्यक है। एक और कारण हो सकता है कि आराधना का प्रबन्ध करने वालों को भोज के दौरान भाग लेने वाले हर व्यक्ति के लिए निजी भागीदारी की आवश्यकता का अहसास नहीं है। मण्डली में हर व्यक्ति की अपनी आत्मिक आवश्यकताएं होती हैं, जिन्हें भोज खाने के समय विचार किया जाता है ताकि भोज के द्वारा दी जाने वाली आत्मिक सामर्थ मिल सके। कोई एक गीत निजी तौर पर यीशु के साथ व्यक्तिगत संगति नहीं दे सकता कि उसे भोज के दौरान गाया जाए।

इस कारण इस समय गीत गाना आराधना करने वाले के लिए समस्या पैदा करता है। यदि वह गीत के बोलों पर ध्यान करता है तो वह यीशु की देह और उसके लहू और यीशु के साथ अपने सम्बन्ध पर निजी मनन नहीं कर सकता। यदि वह प्रभु की देह और लहू पर ध्यान लगता है तो वह गीत के बोलों को नहीं समझ सकता। प्रभु भोज के दौरान मण्डली का गीत गाना प्रभु की देह को ''पहचानने'' (यू.: *diakrino*) की तलाश वाले आराधकों के मनन में खलल डालता है (1 कुरिन्थियों 11:29)।

प्रभु भोज प्रभु की देह और लहु में सहभागिता और सांझ है (1 कुरिन्थियों 10:16)। जब गतिविधियां एक साथ होती हैं तो वे विनाश ध्यान भंग करती और आराधक के मनन में सांझ से खलल पड़ जाएगा। यह पौलुस द्वारा सिखाए गए ''व्यवस्थित रूप'' का उल्लंघन है। एक ही समय में गीत गाना और भोज में भाग लेना एक दूसरे को गड़बड़ा देगा, पर आवश्यक नहीं कि यह बात चंदे पर भी लागू होती हो। चंदा देने के समय विशेष ध्यान लगाने की आवश्यकता नहीं होती। चंदा देने वाले की आराधना मण्डली के गीत गाने से रुकती नहीं है।

कलीसिया के इकट्ठा होने को अर्थ भरपूर आराधना सभाएं बनाने की इच्छा करने में कोई बुराई नहीं है। परन्तु ऐसा करते हुए सब कुछ सही ढंग से और व्यवस्थित रूप से अर्थात नये नियम की शिक्षा के दायरों में ही होना चाहिए। ऐसी कोई योजना नहीं बनाई जानी चाहिए जिससे आराधकों को यीशु की देह और लहू के साथ सहभागिता करते समय यीशु के साथ अपने सम्बन्ध पर ध्यान लगाने के प्रयासों में रुकावट आए।

किस क्रम में ?

प्रभु भोज में भाग लेने की व्यवस्था पर विचार करते हुए एक सवाल खड़ा होता है कि ''पहले क्या लिया जाना चाहिए, रोटी या दाख का रस?'' सुसमाचार के दो वृत्तांतों और कुरिन्थियों के नाम पौलुस के पत्र में कहा गया है कि रोटी पहले खाई जाती थी, उसके बाद दाख का रस पिया जाता था (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-24; 1 कुरिन्थियों 11:23-25)। लूका ने पहले कटोरे, फिर रोटी, फिर कटोरे का उल्लेख किया (लूका 22:17-20)। लूका का वृत्तांत दूसरे वृत्तांतों से दो सम्भव कारणों से अलग लगता है। कइयों का मत है कि लूका ने कटोरे में से पीने का उल्लेख फसह के अन्त में किया, फिर प्रभु भोज की स्थापना के बारे में लिखा और सम्भावना यह है कि यीशु ने कटोरा पहले दिया, पर प्रेरितों ने रोटी खाने और यीशु द्वारा कटोरे का अर्थ समझाए जाने से पहले इससे नहीं पिया।

सम्भवतया दूसरी व्याख्या वाली बात ही हुई। फसह के पर्व के भाग के रूप में दाख के रस को पीने का कोई प्रावधान नहीं बनाया गया था। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रेरितों ने पर्व के दौरान रस नहीं पिया, बल्कि यह भोज के भाग के रूप में कटोरे के पीने पर संदेह अवश्य डालता है। लूका ने यह नहीं कहा कि उन्होंने यीशु द्वारा पहले कहे जाने के समय तुरन्त कटोरे में से पी लिया। इसके बजाय लूका ने लिखा कि यीशु ने कटोरा लिया, जिसके बाद उसने कहा, ''जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख का रस अब से कभी न पीऊंगा'' (लूका 22:18)। मत्ती और मरकुस ने कटोरे के बारे में यीशु की टिप्पणियों के बाद ऐसी ही बात लिखी है (मत्ती 26:29; मरकुस 14:25)। लूका में, यीशु ने कटोरे की बात करके उसके लिए धन्यवाद किया, पर उसने दूसरी बार कटोरे की बात करते हुए इसके लिए धन्यवाद नहीं दोहराया (लूका 22:17-20)। मत्ती और मरकुस ने मसीह द्वारा प्रेरितों को कटोरा देने से थोड़ा पहले रोटी देने के बाद कटोरे के लिए धन्यवाद देने की बात लिखी है।

लूका 22:17 में पहली बार कटोरे का नाम आने पर वहां इसे अंग्रेज़ी में ''एक'' कटोरा कहा गया है और लूका 22:20 में ''एक'' कटोरा की जगह इसे ''कटोरा'' कहा गया है। ''कटोरा'' के लिए अभिव्यक्ति का अर्थ ''एक कटोरा'' होना चाहिए, जिसका हमने पहले उल्लेख किया। यीशु ने ''एक कटोरा'' लिया और बाद में वही ''कटोरा'' लिया।

लूका का वृतांत मत्ती, मरकुस और 1 कुरिन्थियों से मेल खाता है, बेशक पहले कटोरे को फसह के पर्व का भाग बनाए बिना। लूका द्वारा दी गई कड़ी इस प्रकार है: यीशु ने *एक* कटोरा लिया, इसके लिए धन्यवाद दिया और प्रेरितों से इसमें से बांट लेने को कहा; पर उसने उस समय यह नहीं कहा था। फिर उसने रोटी ली, इसके लिए धन्यवाद दिया, उन्हें दी और उनसे इसमें से खाने के लिया कहा। उसके बाद उसने *कटोरा* लिया, उन्हें देते हुए बताया कि यह उसके लहू का प्रतीक है। उन्हें उसके स्मरण में इसे पीना था।

प्रभु भोज में भाग लेने का क्रम इस प्रकार है: लोगों को देने से पहले रोटी के लिए धन्यवाद दिया जाता है। फिर दाख के रस के लिए धन्यवाद देने के बाद लोगों को दिया जाता है।

इसे कब खाना और पीना है?

प्रभु भोज लिए जाने के दिन बाइबल का एक मात्र हवाला संकेत देता है कि यह रविवार

अर्थात सप्ताह के पहले दिन (प्रेरितों 20:7) यानी सब्त के दिन के बाद और प्रभु के जी उठने के दिन लिया जाता था (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1, 2; लूका 23:56ख-24:1)। बाइबल का कोई भी हवाला यह संकेत नहीं देता कि मसीही लोग प्रभु भोज लेने या अपनी आमदनी में से देने के लिए विशेष दिन के रूप में किसी और दिन इकट्ठा होते हों (1 कुरिन्थियों 16:2)।

सब्त के दिन पर यीशु और पौलुस की हर बात के सब हवालों में (मत्ती 12:9, 10; मरकुस 1:21; लूका 4:16, 31; 13:10; प्रेरितों 13:14, 44; 16:13; 17:2; 18:4) यहूदी लोगों को दिए गए संदेश थे न कि मसीही लोगों को। यहूदी लोग सब्त के दिन इकट्ठा होते थे इसलिए उनके लिए उन्हें वचन सुनाने का यह अच्छा अवसर होता था।

व्यवस्था के अनुसार सब्त का दिन विश्राम दिवस के रूप में मनाया जाता था (निर्गमन 31:14-16; व्यवस्थाविवरण 5:12-15)। यह इस्राएलियों को मिस्र की दासता से परमेश्वर द्वारा निकाले जाने के विशेष यादगारी दिन के रूप में मनाया जाना था (व्यवस्थाविवरण 5:15)। व्यवस्था में इस्राएलियों को कहीं भी इसे आराधना के दिन के रूप में अलग करने की आज्ञा नहीं दी गई थी।

कइयों ने यह निष्कर्ष निकाल लिया है कि ''विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना'' की आज्ञा थी (निर्गमन 20:8; देखें व्यवस्थाविवरण 5:12) इसलिए यह आराधना के लिए इकट्ठे होने का संकेत था। ''पवित्र मानने के लिए'' अभिव्यक्ति का अर्थ आराधना के लिए इकट्ठे होना *नहीं* था। इसका अर्थ सब्त को काम के आम दिनों से अलग करना था, जिसमें कोई काम न किया जाए। यिर्मयाह ने लोगों को स्मरण दिलाया कि ''विश्राम दिन को पवित्र मानो और उसमें किसी रीति का काम काज न करने'' और ''विश्राम के दिन को पवित्र मानो और उस दिन यरूशलेम के फाटकों से बोझ लिए हुए प्रवेश न करो'' (यिर्मयाह 17:24ग, 27क)। इस्राएलियों को सब्त के दिन विश्राम करने के लिए कहा गया था पर कहीं भी उन्हें सब्त के दिन आराधना के लिए इकट्ठे होने की आज्ञा नहीं दी गई।

प्रेरितों के तुरन्त बाद के काल के बाद कलीसिया को विश्वव्यापी तौर पर रविवार अर्थात सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज लेना था। यह इस बात का संकेत होना था कि रविवार का दिन प्रेरितों द्वारा ठहराया गया दिन था, जिन्हें सारी सच्चाई में पवित्र आत्मा ने अगुआई दी थी (यूहन्ना 16:13, 14)। आत्मा से सहायता पाकर उन्हें मसीही बनने वालों को वे सब बातें मानना बताने के योग्य होना था, जो यीशु ने उन्हें सिखाने की आज्ञा दी थी (मत्ती 28:19, 20)।

पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों पर पवित्र आत्मा उतरने के बाद (प्रेरितों 2:1-4) उन्होंने लोगों को परमेश्वर का वचन सिखाया। आरम्भिक कलीसिया प्रेरितों की शिक्षा में बनी रही (प्रेरितों 2:42)। जिसका अर्थ यह है कि प्रेरितों की मृत्यु के तुरन्त बाद कलीसिया उसमें बनी रही जो उन्होंने प्रेरितों से सीखा था। सब मण्डलियां प्रभु भोज लेने के लिए सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होती थीं। इसका अर्थ यह होना चाहिए कि प्रेरितों ने उन्हें भोज में भाग लेने के लिए रविवार के दिन इकट्ठा होने की शिक्षा दी थी।

मसीह लोग हर सप्ताह के रविवार इकट्ठा होते थे। उनके इकट्ठा होने का उद्देश्य प्रभु भोज लेना होता था भोज साप्ताहिक रूप में लेना प्रेरितों द्वारा ठहराया गया नमूना होना चाहिए। आज जो लोग प्रेरितों की शिक्षा में बने रहना चाहते हैं, यानी आरम्भिक मसीही लोगों की तरह करना चाहते हैं

उन्हें यीशु के स्मरण में प्रभु भोज में भाग लेन के लिए हर रविवार इकट्ठे होना चाहिए।

मसीही लोगों के लिए इकट्ठा होने के विशेष दिन को ''प्रभु का दिन'' कहा जाता था। यह यूनानी वाक्यांश *he kuriake hemera* (प्रकाशितवाक्य 1:10) का अनुवाद है, जिसका अर्थ प्रेरितों की शिक्षाओं को मानने वाले लोगों के लेखों में रविवार है। यह वाक्यांश ''प्रभु का दिन'' (जिस दिन परमेश्वर विरोधियों को दण्ड देने और उनसे निपटने के लिए कार्य करेगा) से अलग है। रविवार को ''प्रभु का दिन'' कहा जाता है क्योंकि मसीही लोगों के लिए रविवार का दिन प्रभु के भोज में भाग लेने के द्वारा यीशु के प्रति सम्मान दिखाने का विशेष दिन था।

जस्टिन मार्टिर के लेखों के आधार पर हमें मालूम है कि दूसरी सदी तक के मसीही लोग ''रविवार'' को सप्ताह का पहला दिन[3] भी मानते थे। यही वह दिन था जिस दिन वे प्रार्थना करने, वचन में से पढ़ने, भोज में सांझ करने और अपनी आमदनी में से देने के लिए इकट्ठा होते थे। मार्टिर ने लिखा है, ''उस दिन जिसे रविवार कहा जाता है एक ही जगह में एक नगर या देहाती ज़िले के सब रहने वाले इकट्ठे होते हैं।''[4]

बाद के लेखकों ने इसी सच्चाई को प्रमाणित किया कि रविवार अर्थात सप्ताह का पहला दिन यीशु के कष्ट और जी उठने को याद करने के लिए इकट्ठा होने के लिए मसीही लोगों का विशेष दिन था। तब से अब तक मसीही लोग प्रभु भोज मनाने के लिए हर रविवार अर्थात सप्ताह के पहले दिन इकट्ठे होते हैं। वे अन्य समयों पर भी इकट्ठा होते थे पर प्रभु भोज में भाग वे रविवार अर्थात प्रभु के दिन लेते थे, जो उसका दिन है, क्योंकि उस दिन वह मनुष्य जाति की ओर से मृत्यु पर विजयी हुआ था।

सारांश

रोटी खाकर और दाख के रस में से पीकर यीशु को स्मरण करने के लिए इकट्ठे होने का मसीही लोगों का एक विशेष दिन है। हम इसे हर रविवार यानी सप्ताह के पहले दिन लेते हैं। इस प्रकार हम उसके प्रति सम्मान और श्रद्धा दिखाते हैं, जिसने हमारे लिए कष्ट सहा ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें और हमें उसके साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन मिल सके। यीशु को स्मरण करने और उसके दोबारा आने तक उसकी मृत्यु को दिखाने का यह सरल और सुन्दर ढंग है।

टिप्पणियां

[1]*दि ग्रीक इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* प्रकाशितवाक्य 1:10 (न्यू यॉर्क: आइवर्सन-नॉर्मन एसोसिएट्स, 1975), 725. [2]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* तीसरा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैड्रिक विलियम डैन्कर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागा प्रैस, 2000), 989. [3]जस्टिन मार्टिर *डायलॉग* 41.4. [4]जस्टिन मार्टिर *अपोलोजी* 67.1.